सरल स्वभाव

सरल स्वभाव वाला मनुष्य बाहर भीतर मन्सा, वाचा, कर्मणा एक जैसा होता है, वह बनावट छल कपट या कुटिलता से व्यवहार नहीं करता इसलिए लोग निश्चिन्त रहते है। उसकी भोली-भोली बाते प्यारी लगती है। अगर उसके मुख से कभी ऐसी बात भी निकल जाये तो भी वे इतना नाराज नहीं होते। बुरा नही मानते सरल स्वभाव वाले से दूसरे संतुष्ट रहते है वैसे सरल स्वभाव वाला मनुष्य स्वयं भी संतुष्ट रहता है। यदि किसी कारण उसके मन में असंतुष्टता आयेगी तो वो थोड़ा ही समझाये जाने पर जल्दी ही समझ जाने वाला है। सरल व्यक्ति का मन साफ होने के कारण उसमें दिव्य गुणों की धारणा भी जल्दी हो जाती है। सरल चित्त वाला व्यक्ति अपनी मस्ती में मस्त रहता यही सोचता है जो जैसा करेगा वैसा ही पायेगा।

अपनी सत्यता को कभी नहीं छोड़ता सच्चे दिल पर साहेब राजी कि उक्ति के अनुसार उसे ईश्वरीय सहायता भी मिलती है। सरलचित्त, संतुष्ट और सुखी रहता हे। उसकी सच्चाई सफाई के कारण दूसरे लोग भी उसे आशिर्वाद तथा स्नेह देते है। लोगों का विश्वास बैठ जाता है। उससे पवित्रता के वायब्रेशन आते है। सरलता प्रभु को प्रिय है यह बहुत बड़ा गुण है। परमातम की भी उसे आशिर्वाद मिलती है। सरल चित्त मनुष्य में भी अगर कोई अवगुण अथवा कोई कमी हो तो वह साफ-साफ सुना देता है। सच्चे व्यक्ति को भी किसी का भय नहीं रहता है पर सदा खुशी में नाचता रहता है।

अत: सदा सुखी संतुष्ट तथा निर्भय अडोल रहने के लिए मुनष्य को सरलता अवश्य धारण करनी चाहिए। सरलचित्त और उदाचित्त व्यक्ति बहुत ही लोकप्रिय होते है। सरलचित्त व्यक्ति भीषण परिस्थितियों का सामना बड़े ही संयम से करता है। जीव-जन्तु तक भी सहायता करता है। उसमें इतनी शक्ति होती है। वह बुरे से बुरे व्यक्ति का मन पलट देता है।

निर्भयता

दृढ़ निश्चय वाला व्यक्ति सदा निर्भय रहता है हर कार्य बहुत ही हिम्मत से करता है। कार्य चाहे जितना भी कठिन हो परन्तु निराश नहीं होते हौसला बुलन्द और आत्मविश्वास से कार्य को पूरा करता है। इंसान अपने आत्मविश्वास की मजबूती से पहाड़ की चोटी पर चढ़ जाता है, और चन्द्रमा आदि ग्रहों पर राकेट पर चक्कर लगाता है। समुद्र की गहराई भी नाप लेता है। मन की मजबूती से हिम्मत भी आती है। निर्भय भी बन जाते है उसके लिए आत्मा परमात्मा तथा सृष्टि चक्र के ज्ञान की बहुत बड़ी आवश्यकता है। मान लिजिए मृत्यु का डर है किसी के साथ बड़ी दुर्घटना हो जाती है या कोई बड़ा रोग हो जाता है डाक्टर ने जबाब दे दिया है। और व्यक्ति घबरा गया, मृत्यु के भय से उसकी चिन्ता ने उसे चिता बना दी। रोग ने नहीं मारा लेकिन चिन्ता की चिता पर ही अपने आपको खत्म कर दिया।

जिसको यह ज्ञान है समझ है शरीर विनाशी आत्मा अविनाशी है एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है उसमें चिन्ता की क्या बात है। समझ से मृत्यु के भय को समाप्त कर देते है। लोक लाज का भय, परिस्थितियों का भय, मनुष्यों का भय बुद्धि की कमी के कारण भय रहता है। इन सभी भय का कारण है ज्ञान बल की कमी। ज्ञान बल, निश्चय बल, मनोबल, चरित्रबल मन के अन्दर ये विश्वास जागृत हो परमात्मा जो सर्वशक्तिवान है। सारे सृष्टि का रचयिता वो मेरा रक्षक मेरा साथी है तो भय का भूत भाग जायेगा। मान लिजिए कोई शरीर पर बन्धन डालते है। मन पर तो कोई बन्धन डाल नही सकता । मन को प्रभू को याद करने से भय भाग जायेगा। परिक्षा से पार हो जायेगे। परमात्मा तो बिगड़ी को बनाने वाला है

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com